S. S. College, Jehanabad
Class - B.A. Part I (Hons.)
Subject :- Psychology paper-1 (General Psychology)
Teacher's Name :- Dr. Viveke Nand Sharma
Date - 08.09.2020

Topic — Emotion

James-Lange Theory of Emotion.

मनोविज्ञान के क्षेत्र में संवेग मनोवैज्ञानिकों के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र रहा है। सामान्यतः संवेग से तात्पर्य एक ऐसी उत्तेजित अवस्था से है जिसमें कुछ आंतरिक प्रतिक्रियाएँ (Bodily reactions), अभिव्यंजक व्यवहार (expressive movements) तथा कुछ आत्मनिष्ठ भाव (Subjective feelings) अर्थात् सुखद या दुखद भाव इत्यादि सम्मिलित होते हैं। संवेग के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने प्राचीन समय से ही सिद्धांत के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया है जिसमें James-Lange Theory सबसे पुराना सिद्धांत है। यह संवेग का एक शारीरिक सिद्धांत है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन अमेरिकन मनोवैज्ञानिक William James तथा डेनिश शरीरविज्ञान वैज्ञानिक Carl Lange द्वारा स्वतंत्र रूप से 1880 में किया गया। चूँकि इन दोनों वैज्ञानिकों के विचार संवेग के संबंध में एक जैसे थे, मिलते-जुलते थे, इसलिए इस सिद्धांत का नाम दोनों के संयुक्त नाम पर ही रखा गया। इस सिद्धांत द्वारा संवेग की व्याख्या सामान्य बोध (Common sense) की व्याख्या के ठीक विपरीत है। सामान्य बोध के अनुसार, पहले किसी भी संवेगात्मक उद्दीपक या परिस्थिति का प्रत्यक्षण होता है। उसके बाद संवेगात्मक अनुभूति होती है। संवेगात्मक अनुभूति के बाद व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार संवेगात्मक अनुभूति पहले होती है और शारीरिक परिवर्तन या व्यवहार उसके बाद होता है।

लेकिन जेम्स-लांजे सिद्धांत के अनुसार, पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। यदि संवेगात्मक व्यवहार नहीं होगा, तो संवेगात्मक अनुभूति भी नहीं होगी। जैसे - व्यक्ति जब बाघ या भालू देखता है, तो वह भागने लगता है इसलिए वह डर जाता है। James (1913) के शब्दों में — "My theory ... is that the bodily changes follow directly the perception of the exciting facts, and that our feeling of the same changes as they occur is the emotion."

इस सिद्धांत के अनुसार, संवेग की

की अवस्था में घटनाओं का एक विशेष क्रम होता है।

James-Lange theory

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि सबसे पहले कोई संवेगात्मक उद्दीपन उपस्थित होता है जिससे प्राणी की ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तेजित हो जाती हैं। ज्ञानेन्द्रिय के उत्तेजित होने से तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है जो संवेदी स्नायु द्वारा मार्ग एक से होकर Cortex में जाता है। तब प्राणी को उस संवेगात्मक उद्दीपन का ज्ञान होता है। उसके बाद शारीरिक परिवर्तन का आरम्भ होता है। ज्ञान होने के बाद गतिवाही स्नायु द्वारा तंत्रिका आवेग Cortex से निकलकर मार्ग दो से होकर आन्तरावयव (viscera), पेशियों तथा ग्रंथियों में पहुँचता है जिससे नाना-प्रकार के शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं। इसके बाद शारीरिक परिवर्तनों की चेतना का ज्ञान होता है और इसी के साथ संवेगात्मक अनुभूति भी होती है। संवेदी स्नायु द्वारा तंत्रिका-आवेग मार्ग तीन और चार से होकर पुनः Cortex में पहुँचता है और तब प्राणी को शारीरिक परिवर्तनों का ज्ञान होता है और इसी ज्ञान के साथ संवेग की अनुभूति होती है।

उपर्युक्त संवेगात्मक क्रम को एक उदाहरण द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। जब व्यक्ति के सामने कोई सांप (संवेगात्मक उद्दीपन) उपस्थित होता है तो सबसे पहले उसे उस उद्दीपन का ज्ञान होता है। उसके बाद ज्ञानवाहक स्नायु तंत्र के

उत्पन्न होने के कारण शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं। इन परिवर्तनों की प्रत्यक्ष जानकारी की चेतना होती है तब उसे भय की अनुभूति होने लगती है तब उसे भय की अनुभूति होने लगती है। स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति का आधार संवेगात्मक व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन है। इस सिद्धान्त के अनुसार पहले शारीरिक परिवर्तन या व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। James (1890) ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "We feel sorry because we cry, angry because we strike, afraid because we tremble."

James ने अपने सिद्धान्त के पक्ष में एक तर्क यह दिया कि अभिनेता या अभिनेत्री जिस भाव का अभिनय कर व्यवहार करते हैं, ठीक उसी तरह उन्हें संवेगात्मक अनुभूति होती है, अतः निरीक्षण परीक्षण से यह पता चलता है कि क्रोध का अभिनय करने वाले अभिनेता को वास्तव में क्रोध की अनुभूति होती है और भय का अभिनय करने वाले को वास्तव में भय संवेग की अनुभूति होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक अनुभूति वास्तव में संवेगात्मक व्यवहार पर आधारित है। Lange ने संवेग के मूल रूप से Vasomotor disturbance (वाहिका गति उपद्रव) पर आधारित कर दिया है।

Laird (1984) तथा Matsumoto (1987) द्वारा Facial feedback hypothesis (आनन पुनर्निवेशन प्राक्कल्पना) के संबंध में किए गए अध्ययनों से भी James-Lange theory का समर्थन मिलता है। यह प्राक्कल्पना यह बतलाता है कि आनन अभिव्यक्ति संवेगात्मक अवस्थाओं को प्रभावित करता है तथा साथ-ही-साथ उन्हें प्रतिबिम्बित भी करता है। जैसे- अगर हम हँसते हैं तो खुशी का अनुभव करते हैं और जब भौंह सिकोड़ते हैं या मुँह चढ़ाते हैं, तो हमें दुःख का अनुभव होता है। McCanne & Anderson (1987) तथा Ekman et al. (1990) द्वारा किए गए अध्ययनों से भी James-Lange theory का काफी समर्थन मिला है।

लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त की कटु आलोचना की है जो इस प्रकार हैं :-

① Sherrington (1900) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि संवेगात्मक व्यवहार वास्तव में संवेगात्मक अनुभव का आधार नहीं है। इन्होंने एक कुत्ते पर प्रयोग किया। कुत्ते की गर्दन के पास सुषुम्ना नाड़ी को काट दिया गया जिससे शारीरिक उपद्रवों की सूचना cortex में जाना बंद हो गया। फिर भी कुत्ते में भय, क्रोध इत्यादि संवेग देखे गए। इस अध्ययन से James-Lange theory का खंडन होता है।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

② Cannon, Lewis & Britton (1927) ने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर यह बताया कि संवेगात्मक अनुभूति के लिए संवेगात्मक व्यवहार का ज्ञान आवश्यक नहीं है। इन्होंने बिल्ली के Sympathetic nerve को काट दिया। इस तरह शारीरिक उद्दीपन का ज्ञान बिल्ली में सम्भव नहीं था। James के अनुसार बिल्ली को किसी तरह के संवेग का अनुभव नहीं होना चाहिए था, लेकिन बिल्ली में सभी तरह के संवेग होते देखे गये।

③ Schachter (1962) ने भी इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि यह सिद्धान्त संवेग की व्याख्या करने में सफल नहीं है। उन्होंने प्रयोज्य को Adrenin की सूई देकर शारीरिक उद्दीपन उत्पन्न किया। प्रयोज्यों से जब यह पूछा जाता कि क्या किसी संवेग का अनुभव हुआ कि नहीं, तो प्रयोज्यों ने यह बताया कि उन्हें किसी भी प्रकार के संवेग की अनुभूति नहीं हुई। यदि शारीरिक उद्दीपन संवेगात्मक अनुभूति का आधार होता तो उन्हें संवेग का अनुभव होना चाहिए था। इस तरह जेम्स-लांगे सिद्धान्त गलत साबित हो जाता है। Marañon (1924) ने भी अपने प्रयोज्यों को epinephrine की सूई दी जिससे उनके शरीर में कई तरह के शारीरिक परिवर्तन हुए लेकिन उन्हें किसी प्रकार के संवेग का अनुभव नहीं हुआ।

④ Archer ने अभिनेता तथा अभिनेत्री का जो अध्ययन किया, अभिनीत विषय का व्यवहार करते हुए जब उनसे यह पूछा जाता कि अभिनय करते समय उन्हें ठीक उसी तरह के संवेग का अनुभव होता है या नहीं, जिस तरह के व्यवहार वे करते हैं। अधिकतर अभिनेता तथा अभिनेत्रियों ने स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर दिया। इससे भी James का सिद्धान्त गलत साबित हो जाता है।

⑤ Cannon (1927) ने भी James-Lange theory की आलोचना करते हुए कहा कि संवेग का केन्द्र स्वायत्त तंत्रिका तन्त्र न होकर Hypothalamus है। उन्होंने बिल्ली पर प्रयोग किया और देखा कि बिल्ली के Hypothalamus को काट देने पर संवेग का अनुभव रुक गया। दूसरी ओर देखा स्वायत्त तंत्रिका तन्त्र को काट देने पर बिल्ली में संवेग का अनुभव पहले की तरह होता रहा। इससे यह साबित हो जाता है कि संवेग का आधार स्वायत्त तंत्रिका तन्त्र नहीं है, बल्कि Hypothalamus है। Cannon ने बिल्ली पर प्रयोग करके यह साबित कर दिया कि संवेगात्मक व्यवहार एवं संवेगात्मक अनुभूति दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ होती है।

⑥ Schachter & Singer (1962) ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह बताया कि संज्ञान का संवेगों में महत्वपूर्ण योगदान है। एक ही संवेगात्मक परिस्थिति में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न संवेग उत्पन्न हो सकते हैं।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि शारीरिक परिवर्तन पर ही संवेगात्मक अनुभूति निर्भर नहीं करती है। अतः James-Lange theory केवल one-sided hypothesis है जिसका कोई विशेष प्रयोगात्मक आधार नहीं।

— x —

SHOT ON REDMI Y3